सर्वे एवं रिसर्च स्टडीज (Survey & Reasearch Studies)

महाराणा प्रताप संस्थान बेस लाईन सर्वे एवं रिसर्च स्टडीज का कार्य आरम्भ से करता आ रहा है। सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के तहत संस्थान ने बेसलाईन सर्वे का कार्य जिला परिषद, टौंक जिले में वित्तिय वर्ष 2004–05 के दौरान किया। इसी क्लस्टर विकास कार्यक्रम के तहत 2006 में आरी–तारी जरदोजी क्लस्टर, नायला तथा 2008–09 में पीतल के बर्तन पर नक्काशी क्लस्टर, बालाहैड़ी दौसा का बेसलाईन सर्वे कर डायग्नोस्टिक स्टडी तैयार की गई जिसके आधार पर क्लस्टर विकास कार्यक्रम का संचालन नायला 2006–2010 तथा बालाहैड़ी 2009–2012 तक किया गया। इसी प्रकार वर्तमान में राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना–2 के तहत सीकर मण्डल प्रबन्धन ईकाई के तहत 40 गांवों में बेसलाईन सर्वे के साथ ग्रामीणों की वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समितियों का गठन किया जाकर ग्राम के सर्वांगीण विकास हेतु सूक्ष्म नियोजन तैयार किये जा रहे है।

इसी प्रकार वर्ष 2005–06 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महिला एवं बाल विकास विभाग के तहत एक रिसर्च स्टडी "Role of tribal women wage earner in insuring family food security in scheduled areas of Rajasthan in changing environmental and economic scenario" की गई। जिसके तहत ट्राइबल सब प्लान के तहत बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही जिले का आबूरोड़, और उदयपुर, राजसमंद शामिल था। जिसके तहत सात क्षेत्रों के 125 गांवों में 2500 आदिवासी घरों का सर्वे किया गया। इन आदिवासी क्षेत्रों के गांवों की प्राथमिक जानकारी के साथ ग्राम के संसाधनों आदिवासी परिवारों की आय के स्रोतों यथा लघु एवं सीमान्त कृषकों, कृषि व अकृषि मजदूरी, पशुपालकों, औषधीय पौधों के एकत्रीकरण में लगे परिवारों और अन्य परम्परागत आदिवासी गतिविधियों में लगी महिलाओं से जानकारी एकत्रित की गई। इसके साथ ही क्षेत्र की समस्या, आंकड़ों का एकत्रीकरण तथा समूह चर्चा कर 125 गांवों पर शोध किया गया तथा 50 केस स्टडी तैयार की गई। एक वर्षीय परियोजना प्रख्यात विद् प्रोफेसर पी.एस. भटनागर के निर्देशन में इस स्टडी को तैयार किया गया। जिसके आधार ट्राइब सब प्लान के तहत गतिविधियों का निर्धारण किया गया।

जयपुर बाल श्रमिक परियोजना के तहत जोखिमपूर्ण व्यवसाय से जुड़े 9 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बाल श्रमिकों का सर्वे संस्थान जयपुर शहर के वार्ड संख्या 30,31,32,33,34,35 में किया गया। इस सर्वे के आधार पर 150 बाल श्रमिक चयनित किये गये। जिने बाल श्रमिक परियोजना के तहत शिक्षण के साथ पुनर्वास हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान कर आत्म निर्भर बनाया गया।